

पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

खण्ड- XXXI अंक–19 15 अक्टूबर 2026

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
हिंदी कक्ष
https://hindi.iitd.ac.in/

"ख़ुद वह बदलाव बनिए, जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।"

— महात्मा गांधी

मुख्य बिंदु

- संस्थान में गांधी जयंती और लाल बहादुर शास्त्री जयंती का आयोजन
- ट्रायस्ट-2027
- स्वागत
- हिंदी समारोह में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कविताएँ
- अस्पताल रोगी देखभाल भत्तों की दरों में वृद्धि
- आरोग्य स्वास्थ्य वार्ता शृंखला का आयोजन
- 40वीं अंतर-आई.आई.टी. जलीय क्रीड़ा प्रतियोगिता (एक्वेटिक्स)

संस्थान में गांधी जयंती और लाल बहादुर शास्त्री जयंती का आयोजन








दिनांक **02 अक्टूबर 2026** को संस्थान में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तथा श्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती हर्षोल्लास से मनाई गई। कार्यक्रम के आरंभ में प्रो. रंगन बनर्जी (निदेशक), प्रो. अरविंद कुमार नेमा (उप निदेशक-प्रचालन) तथा संस्थान के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा **राष्ट्रपिता महात्मा गांधी** एवं **पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री** की तस्वीरों पर पुष्पांजलि अर्पित की गई।

इस अवसर पर उपस्थित सभी लोगों को संबोधित करते हुए निदेशक महोदय ने कहा कि गांधी जयंती और शास्त्री जयंती केवल इन महान विभूतियों को स्मरण करने का अवसर नहीं हैं, बल्कि ये दिवस हमें उनके आदर्शों, जीवन-मूल्यों और विचारों को आत्मसात कर अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा भी देते हैं। उन्होंने कहा कि आज की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों में महात्मा गांधी का सत्य, शांति और अहिंसा का संदेश पहले की तरह ही प्रासंगिक है। गांधीजी ने अपने जीवन और विचारों से यह सिद्ध किया कि अहिंसा दुर्बलता का नहीं, बल्कि आत्मबल, साहस और दृढ़ संकल्प का प्रतीक है। बच्चों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि देश का भविष्य उनके हाथों में है और यह आवश्यक है कि वे सत्य, शांति और अहिंसा के मूल्यों को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाएँ। गांधी जी के आदर्शों को केवल पढ़ने और समझने तक सीमित न रखकर अपने दैनिक जीवन में भी अपनाना चाहिए। उन्होंने बच्चों को प्रेरित किया कि वे महात्मा गांधी के सत्य, संवाद, विवेक और अहिंसा के मूल्यों को अपने आचरण में उतारें और एक संवेदनशील, शांतिपूर्ण तथा न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में अपनी भूमिका निभाएँ।

निदेशक महोदय ने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि गांधी जी का जीवन हमें सिखाता है कि बिना हिंसा का सहारा लिए भी अन्याय का विरोध किया जा सकता है और न्याय के लिए संघर्ष किया जा सकता है। उन्होंने बच्चों से आग्रह किया कि वे अपने विचारों को साहस और विवेक के साथ व्यक्त करें तथा दूसरों के विचारों का सम्मान करते हुए सही बात के लिए दृढ़ता से खड़े हों।

अपने संबोधन में श्री लाल बहादुर शास्त्री को स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि शास्त्री जी का जीवन सादगी, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और कर्तव्यनिष्ठा का प्रेरणादायी उदाहरण है। उनका प्रसिद्ध नारा *"जय जवान, जय किसान"* देश की सुरक्षा में सशस्त्र बलों तथा राष्ट्र की प्रगति में किसानों की महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। प्रधानमंत्री के रूप

में उनका कार्यकाल सादगी, समर्पण और राष्ट्रसेवा के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक रहा। उन्होंने कहा कि यदि हम आई.आई.टी. दिल्ली में भी शास्त्री जी के आदर्शों को अपनाते हुए अपने कार्यों में अनुशासन, निष्ठा और उत्तरदायित्व को प्राथमिकता दें, तो यह न केवल संस्थान को सशक्त बनाएगा, बल्कि राष्ट्र की प्रगति में भी सार्थक योगदान देगा।

उन्होंने कहा कि हमें इन दोनों महान नेताओं के आदर्शों, विचारों और दृष्टिकोण को आत्मसात करते हुए उन्हें अपने जीवन और कार्यशैली में अपनाना चाहिए तथा उनके सिद्धांतों के अनुरूप आचरण करने का सतत प्रयास करना चाहिए।

इस अवसर पर संस्थान समुदाय के लिए 'फैंसी ड्रेस: मुझमें बापू' तथा 15 वर्ष से कम आयु के विद्यार्थियों के लिए 'मैं पल दो पल का गांधी हूँ' विषय पर प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। दोनों प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 10-10 प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर स्वच्छता कर्मचारियों को भी सम्मानित कर उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के प्रति आभार व्यक्त किया गया। यह कार्यक्रम बी.आर.सी.ए. एवं संस्थान परिसर स्थित खादी ग्रामोद्योग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया।

ट्रायस्ट-2027

कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD-8502/1/2025-CDNI/6062/2026 दिनांक 05.10.2026 के अनुसार निदेशक महोदय ने ट्रायस्ट-2027 के लिए **प्रो. अगम गुप्ता** (प्रबंध अध्ययन विभाग) को अध्यक्ष और **प्रो. विक्रांत वर्मा** (रासायनिक इंजीनियरी विभाग) को उपाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया है।

स्वागत

- स्थापना अनुभाग- I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD-127/2/2026-ESTT-1I/6013/2026 दिनांक 01.10.2026 के अनुसार **डॉ. निशा** (17680) ने संस्थान के कुसुमा जैव विज्ञान स्कूल में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में दिनांक 23.09.2026 को (एक वर्ष की अवधि के लिए) कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग- I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD-107/5/2026-ESTT-1I/6112/2026 दिनांक 07.10.2026 के अनुसार **डॉ. शुभम चौधरी** (17682) ने संस्थान के कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में दिनांक 29.09.2026 को (एक वर्ष की अवधि के लिए, जिसे एक वर्ष और बढ़ाया जा सकता है) कार्यभार ग्रहण किया है।

हिंदी समारोह में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कविताएँ

हिंदी माह 2026 के समापन समारोह के अवसर पर स्वरचित हिंदी कविता-पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने अपनी रचनात्मकता और भावों को कविता के माध्यम से अभिव्यक्त किया। प्रतियोगिता चार श्रेणियों-संवर्ग 'ए' के अधिकारियों, संवर्ग 'बी' एवं 'सी' के नियमित कर्मचारियों, अनुबंध एवं आउटसोर्स आधार पर कार्यरत कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों-के लिए आयोजित की गई। इन चारों श्रेणियों में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों की कविताएँ सम्पर्क के इस अंक में प्रकाशित की जा रही हैं। आशा है आप सभी को ये कविताएँ पसंद आएँगी।

मैं और भगवन!

सुबह-सुबह किसी ने मेरा दरवाज़ा खटखटाया,
मेरे पूछे जाने पर खुद को भगवन बतलाया।

आने का कारण पूछने पर,
मेरे पापों का घड़ा भर जाना बताया।
मेरे मुस्कुराने पर,
मृत्यु दंड मुझे सुनाया।

फिर मृत्यु के आभास से,
कुछ डर की आहट मुझे भी हुई।
थोड़ा घबरा के, थोड़ा सकपका के,
मैंने भी एक सवाल पूछ डाला—

कि ऐसे कौन से पाप मेरे विचित्र थे,
ऐसी कौन सी दुविधा में मेरे चरित्र थे।

फिर भगवन मुस्कुराए,
मेरे भी थोड़े साँस में साँस आई।

मैंने फिर पूछ डाला कि बताएँ—
कि ऐसे कौन से पाप मेरे विचित्र थे,
ऐसी कौन सी दुविधा में मेरे चरित्र थे,
जो सीधा फ़ैसला तुमने मौत का सुनाया,
कहीं हाथ तोड़कर, कहीं पैर तोड़कर,
कम से कम आभास तो होता मुझे दिलाया।

फिर भगवन के चेहरे का रंग ढंग बदला,
साथ-साथ मेरी साँसों पर भी पहरा बदला।

फिर भगवन बोले—
कि मेरी प्रकृति का तूने खनन किया,
मेरे दिए हुए अधिकारों का हनन किया,
जिस धरती माँ ने तेरा पोषण किया,
तूने उसी धरती माँ का शोषण किया।

ग़ौर से देख,
इन लुप्त होते पेड़ पक्षियों को,
सूखती जा रही इन हरी पत्तियों को,
बंजर होती ज़मीनों को,
उन पर चलती तेरी बेरहम मशीनों को।

तू अभी तक अपने पापों से क्यों न डरा,
तू क्यों न अपनी शर्म से मरा।

इन हालों में तो तू वो दिन भी लाएगा,
जिस दिन जीव जीव को नहीं,
तेरे जैसा मनुष्य अपनी ही भूख में,
अपने भाई बंधुओं को खाएगा।

और फिर तू पछताएगा,
फिर मुझसे नहीं,
तू ख़ुद से ये सवाल पूछ पाएगा—

कि अपनी ऊँचाइयों का मैं आकलन लगाऊँ कैसे,
कि अपनी कामयाबी को मैं ख़ुद को समझाऊँ कैसे,
ख़ुद ही ख़ुद की ज़िद में खड़ा हूँ,
ख़ुद ही ख़ुद से लड़ा हूँ।

फिर नींद खुली,
तो पता लगा कि वो सपना था,
वो भगवन नहीं,
मेरा ज़मीर था।

मगर जो भी कुछ था,
बहुत कुछ सिखा गया,
नींद ही नींद में मुझे जीवन का सार सिखा गया,
और संग-संग ये बतला गया

कि आज की दौड़ में हम कल को भूल जाते हैं,
फ़िर उत्तराखंड जैसी आपदा पर दुख हम जताते हैं,
खनन शोषण इस पृथ्वी का किए जाते हैं,
और फिर ख़ुद को आधुनिक हम बताते हैं।

उठो, जागो!
अब कोई कृष्ण नहीं आएंगे तुम्हें बचाने को,
ख़ुद की ही जंग में,
ख़ुद को ख़ुद से लड़वाने को।

मीनाक्षी
पीएच.डी. शोधार्थी, भौतिकी विभाग

जज़्बात, चाहतें और बेबसी

अक्सर जब रात होती है, अकेलेपन से मुलाक़ात होती है,
आती है कुछ बातें मन में, खुशियां ना जिनकी जात होती है।
सोचा जज़्बातों पर कुछ लिखूं, फिर देखा उनकी लिस्ट बड़ी है,
ज़ेहन में आया ज़िन्दगी पे लिखूं, तो पाया वो तो हर जगह बिखरी पड़ी है।।

हर रिश्ते में दिखती अब सियासत है, हर किसी को बहस में जीतने की चाहत है,
जीत छोड़ हार मान के देखो, बेबसी में बहुत ताक़त है।
मिट्टी सी चाहतें क्या नज़र आएंगी, ज़माना पहले से मटमैला ही है,
अपनों के साथ जीने की चाहत है बस, जानते हैं मरना अकेला ही है।।

हमेशा मीठे जज़्बात ही दें, कोई चीनी मिल नहीं है,
बहुत आसान पहचान है इसकी, अगर दुखता नहीं तो दिल नहीं है।
समय के साथ मुश्किल उलझनों को अंकुश करना है,
इस दुनिया में सबसे मुश्किल काम ही ख़ुद को खुश रखना है।।

बेबसी तो रक़ीब है ही, पर यह बात दुखती नहीं,
पर ख़ुशी को ना जाने क्या जल्दी है, आते ही चली जाती है, रुकती नहीं।
तकलीफ़ ना सही, सुरूर को चुनने का अधिकार तो देती,
काश ये ज़िन्दगी भी माँ-बाप की तरह सिर्फ़ प्यार ही देती।।

उन्हें लगता रहा कि बस एक 'बैल बुद्धि' हूँ मैं,
उन्हें तो दूर के ढोल ही हमेशा सुहावने लगे।
जो ख़ामोशी में 'लोहे के चने' चबाए मैंने,
उन्हें लगा कि हम सिर्फ़ 'ख़याली पुलाव' पकाने लगे।।

'लुटिया डुबोएगा' यह लड़का सबने यही कहा था,
पर मैं चुपचाप अपनी अक़्ल का घोड़ा दौड़ाता रहा।
जब-जब सीधी उँगली से घी न निकला,
मैं वक़्त की नज़ाकत देख उँगली टेढ़ी बनाता रहा।।

ना कोई 'तिल का ताड़' बनाया, ना गाए बेवजह अपने राग,
अब जाकर समझ में आया है मुझे भी 'आटा-दाल का भाव'।
'अंधों में काना राजा' बनके मुफ़्त का ज्ञान नहीं बाँटा,
ज़मीन पे ही पाँव रखे और सादगी से चुना हर पड़ाव।।

कभी अंगारों पे चलना पड़ा, कभी 'साँप-सीढ़ी' सा खेल था,
ये ज़िंदगी तो कीचड़ में भी 'कमल खिलने' का नाम है।
ज़रा सा संभल क्या गए, कई चेहरे 'नौ-दो-ग्यारह' हुए,
अब लोहा मानेगा ज़माना, क्योंकि नियत में सिर्फ़ काम है।।

सिर्फ़ सफलता की नुमाइश है हर जगह,
पर अच्छे से अच्छा इंसान फेल होता है,
असली और असलियत का ज़िन्दगी में, बहुत कम मेल होता है।
कहां है वो लोग जो ख़ुद खुश रह कर, सबको खुश रख पाते हैं,
हमसे तो नाराज़ खुशियां ही होती हैं, ग़म कहां इतना इतराते हैं।।

कैसे मनाऊं उसे, वो रूठ गया, वो मान गया,
उसकी गलती या मेरी? ये बवाल कैसा है,
कब तक दूसरों को मनाते रहोगे, कभी ख़ुद से भी पूछो हाल कैसा है।
ग़लत-फ़हमियों में रह के देखा है मैंने, सुकून की हवा पास आने से मुकर जाएगी,
ज़िंदगी बहुत छोटी है, जी लीजिए, वरना गुज़र जाएगी।।

अमिताभ सिंह
उप कुलसचिव (निर्माण एवं छात्रावास लेखा)

कार्यालय की भाषा

हिंदी दिवस फिर आया, हिंदी का उत्सव लाया,
साल भर अंग्रेज़ी में लिखते हैं, आज हिंदी ने याद दिलाया।

भाषा वही है जो भावों को, सहज हृदय तक पहुँचा दे,
पर ऑफिस में हिंदी लिखते ही पहले शब्दकोश याद दिला दे।

'कृपया अवगत कराने का कष्ट करें' हिंदी का सधा संदेश,
"Kindly keep me posted" और बदल गया परिवेश।

'प्रकरण विचारार्थ प्रस्तुत है' शब्दों में गंभीर विचार,
"Submitted for consideration" और ईमेल लगे तैयार।

'कृपया आवश्यक कार्रवाई करें' सीधा-सादा व्यवहार,
"Please do the needful" ईमेल लगे शानदार।

'अनुमोदन हेतु प्रस्तुत है' हिंदी का अपना मान,
"Submitted for kind approval" अंग्रेज़ी बन गई पहचान।

बैठक कहे तो देसी लगे मीटिंग कहे तो कूल
'समय-सीमा' कुछ कठिन लगे, "डेड लाइन" लगे simple to use.

यही तो है आज की उलझन, यही हमारा सवाल,
अपनी भाषा बोलने में झिझक, और अंग्रेज़ी में इतना कमाल।

'जो भाव से अर्थ बदले, चिन्ह से सारांश,
अल्प से ठहराव दे, और पूर्ण से विराम।

अंग्रेज़ी काम की भाषा सही, हिंदी दिल की भाषा रहे,
एक हमारी ज़रूरत है, दूसरी हमारी पहचान बनें।

और कार्यालय का अंतिम सत्य, "Please do the needful"
या 'आवश्यक कार्रवाई करें' भाषा चाहे कोई भी हो,
अंत में दोनों यही कहें- 'कृपया काम कर दें'

सुश्री मेघा लखमेरा
सहायक प्रशासनिक अधिकारी (शैक्षणिक अनुभाग)

ऐसा क्यों करते हैं हम?

जो पैदा करती है अस्तित्व इस दुनिया का,
उसके अस्तित्व को क्यों अस्वीकार करते हैं हम?
जिसकी कोख में बनती, पलती और जीती है ज़िन्दगी,
उसकी ज़िन्दगी को महफ़ूज़ क्यों नहीं रखते हम?

जिसके वात्सल्य और करुणा की छाँव में पलता है बचपन,
उस पर करुणा व प्रेम क्यों नहीं दिखाते हम?
जो माता, बहन, पत्नी व दोस्ती के रिश्तों को बखूबी निभाती है,
उन रिश्तों की लाज क्यों नहीं रखते हम?

जो ख़ुद अभावों में रहकर, दूसरों के भावों को पूरा करती है,
उसकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ क्यों करते हैं हम?
जो अपनों की इज्ज़त के लिए, ख़ुद को कुर्बान कर देती है,
उसकी इज्ज़त सरे-बाज़ार नीलाम क्यों करते हैं हम?

जो पहले बेटी, फिर पत्नी और माँ बनकर प्रेम लुटाती है,
उसके प्रेम करने पर उसे सज़ा क्यों देते हैं हम?
जो देवी बनकर दुनिया को अपनी भक्ति से तृप्त कर देती है,
उससे शैतान जैसा सलूक क्यों करते हैं हम?

जिसे सृष्टि की उत्पत्ति का कारण बनाया प्रकृति ने,
उसके जन्म लेने पर क्यों खुश नहीं होते हम?
आख़िर ऐसा क्यों करते हैं हम?

गौरव सचदेवा
सलाहकार (संकायाध्यक्ष- शैक्षणिक कार्यालय)

अस्पताल रोगी देखभाल भत्तों की दरों में वृद्धि

समन्वय अनुभाग से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD-4/1/2025-CDN-Part (1) I/6067/2026 दिनांक 05.10.2026 के अनुसार, अस्पताल रोगी देखभाल भत्ता (HPCA) एवं रोगी देखभाल भत्ता (PCA) की मौजूदा दरों में निम्नानुसार वृद्धि की गई है:

क्र. सं.	कर्मचारियों की श्रेणी	मौजूदा दर (प्रति माह)	संशोधित दर (प्रति माह) 01.01.2024 से प्रभावी
1.	7वें केंद्रीय वेतन आयोग के अनुसार वेतन मैट्रिक्स लेवल-8 तक के योग्य कर्मचारी	₹ 4,100/-	₹ 5,125/-
2.	7वें केंद्रीय वेतन आयोग के अनुसार वेतन मैट्रिक्स लेवल-9 और उससे ऊपर के योग्य कर्मचारी	₹ 5,300/-	₹ 6,625/-

विस्तृत विवरण के लिए विज्ञप्ति सं. IITD-4/1/2025-CDN-Part (1)/7025 दिनांक 30.09.2026 देखें।

आरोग्य स्वास्थ्य वार्ता शृंखला का आयोजन

संस्थान के अस्पताल एवं अकादमिक आउटरीच कार्यालय द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता पहल "आरोग्य स्वास्थ्य वार्ता शृंखला" के 14वें सत्र का आयोजन किया जा रहा है। यह "जीवन के लिए आँखें" विषय पर एक ज्ञानवर्धक स्वास्थ्य वार्ता है, जिसमें नेत्र स्वास्थ्य, आँखों की सामान्य समस्याओं, बचाव के तरीकों तथा नियमित रूप से आँखों की जाँच के महत्त्व पर चर्चा की जाएगी। कार्यक्रम से संबंधित अन्य महत्त्वपूर्ण विवरण निम्नानुसार हैं:

वक्ता: डॉ. तुषार अग्रवाल, कॉर्निया, मोतियाबिंद और रिफ्रैक्टिव सर्जरी (अपवर्तक शल्य) सेवाएँ, आर.पी. सेंटर फॉर ऑप्थैल्मिक साइंसेज, एम्स, नई दिल्ली

विषय: जीवन के लिए आँखें

दिनांक: 21 अक्टूबर 2026 (बुधवार)

समय: शाम 04:00 – 05:30 बजे तक

स्थान: सेमिनार हॉल

कार्यक्रम में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए कृपया नीचे दिए गए लिंक के माध्यम से अपना पंजीकरण करें:

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSdAWmDS1vyKyHMqO0vFUyuRkppPAg-4Z74aA1_asHcyBdzYicQ/viewform

40वीं अंतर-आई.आई.टी. जलीय क्रीड़ा प्रतियोगिता (एक्वेटिक्स)

संस्थान के विद्यार्थियों ने अपनी मेहनत, खेल भावना और शानदार प्रदर्शन से 40वीं अंतर-आई.आई.टी. जलीय क्रीड़ा प्रतियोगिता में सफलता की नई इबारत लिखी। आई.आई.टी खड़गपुर में 30 सितंबर से 05 अक्टूबर 2026 तक आयोजित इस प्रतियोगिता में संस्थान ने पुरुष तैराकी और वाटर पोलो, दोनों चैंपियनशिप अपने नाम कीं।

संस्थान की तैराकी टीम ने 51 अंक अर्जित किए और 14 पदक जीतकर अपनी सफलता का परचम लहराया। वहीं, वाटर पोलो टीम ने पूरे टूर्नामेंट में अपनी जीत का सिलसिला बनाए रखते हुए फाइनल मुकाबले में आई.आई.टी. मद्रास को 16–5 से हराकर शानदार जीत दर्ज की।

वाटर पोलो टीम की यह उपलब्धि अंतर-आई.आई.टी. प्रतियोगिता के फाइनल में उसकी लगातार तीसरी उपस्थिति के रूप में भी उल्लेखनीय है।

टीम की शानदार जीत के साथ-साथ व्यक्तिगत स्तर पर भी संस्थान ने एक उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की। बोर्ड फॉर स्पोर्ट्स एक्टिविटीज़ (BSA) के महासचिव रचित अतुल रामभिया को प्रतियोगिता में उनके प्रदर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ वाटर पोलो खिलाड़ी के खिताब से सम्मानित किया गया। उनका यह सम्मान टीम की सफलता में एक और गौरवपूर्ण अध्याय जोड़ता है।

दो चैंपियनशिप, 14 पदक और एक व्यक्तिगत सम्मान -संस्थान की यह उपलब्धि खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ-साथ प्रशिक्षकों, सहयोगी स्टाफ और पर्दे के पीछे रहकर योगदान देने वाले सभी सदस्यों के अथक प्रयासों, समर्पण और टीम भावना का परिणाम है। यह जीत व्यक्तिगत प्रतिभा के साथ-साथ सामूहिक प्रयास और टीम भावना की भी जीत है।





डिज़ाइन एवं मुद्रण: एक्सेल प्रिंटिंग यूनिवर्स, नई दिल्ली